गायन विषय में Ph.D. की उपाधि हेतु शोध सार

डिपार्टमेन्ट ओफ इन्डियन क्लासिकल म्यूज़िक - वोकल
फैकल्टि आँफ परफार्मिंग आर्ट्स
दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ओफ बडोदा
वडोदरा

शोधार्थी:

राजा श्यामकुमार उपाध्याय

मार्गदर्शक :

डॉ. सिंघ अश्विनीकुमार आर.

शोध का विषय:

ऋतुगेय राग एवं आधुनिक बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Registration Date: 29/04/2017

Registration number: FOPA/64

शोध कार्य करने की आवश्यकता

रागों और बंदिशों पर यत्र-तत्र शोध कार्य हुआ है। कुछ कार्य सारगर्भित भी है। तो कुछ अधूरे उद्देश्यों कों पुष्टि करने वाले है। मेरी दृष्टि में रागों और बंदिशों का ऋतु से संबंध स्थापित करते हुए कोइ कार्य अभी तक हुआ नहीं है। अपितु इस विषय पर शोध प्रबंध लिखने की आवश्यकता महसुस हुइ। और इस शोध प्रबंध के द्वारा भविष्य में विद्यार्थी एवं शिक्षकगण इसका पूर्ण लाभ उठायें तथा इस विषय से लाभान्वित हो इसी को दृष्टिगत कर यह कार्य किया गया है।

अध्ययन की परिकल्पना

शोधार्थि की परिकल्पना थी की रागों और बंदिशों को मानवीय एवं प्राकृतिक भावों को जोड कर उसमें निहित वेशिष्ट्यों को सांगीतिक समाज के सामने लाना ही है। जो कार्य इस शोधप्रबंध में किया गया है।

शोध का उद्देश्य एवं भूमिका

राग भारतीय संगीत की बुनियाद है जीव है आत्मा है और सबसे महत्वपूर्ण स्वरूप या तत्व रूप है। यह संगीत कला को प्रदर्शित करने का एक एसा माध्यम है जीसमें भाषा, भाव, स्वर, लय, कल्पना, तथा कलाकार की कुशलता इन सभी का सुचारु रूप से समन्वय दृष्टिगत होता है।

राग शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का है, जीसका उद्गम रंज धातु से हुआ है। इस धातु का प्रयोग रंगने के अर्थ में हुआ है। संगीत शास्त्र में इसका प्रयोग सामान्य और विशेष दोनों अर्थ में हुआ है। सामान्य अर्थ में यह रंजकता का द्योतक है और विशेष अर्थ में एक ऐसे नादमय व्यक्तित्व का द्योतक है, जो स्वरमय मानमय से समन्वित है। इन दोनों का विच्छेदन नहीं किया जा सकता अर्थात ये दोनों परस्परालंबी है। प्रत्येक राग सुखप्रद होने के अर्थ में तो रंजक होता ही है किंतु इसका अपना एक वैशिष्ट्य होता है। भिन्न भिन्न रागों की इस विशिष्ट रंजकता को प्रस्तुत करने में किस कलाकार को कितनी सफलता मिली है यह उसकी आजीवन साधना और तपस्या पर निर्भर है।

राग भारतीय सभ्यता व संस्कृति का एक अविच्छिन्न, भावपूर्ण कलात्मक रूप है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के विद्वानों ने इसे समय समय पर परिभाषित किया है। जिनका मूल उद्देश्य यह रहा है की, स्वर वर्ण से युक्त ध्वनि विशेष और उसके भेद जो रंजकता उत्पन्न करे उसे ही राग की संज्ञा दी जाये।

राग को स्वरों व वर्णों द्वारा सजाया जाता है। ये स्वर व वर्ण निर्धारित ढांचे के अंतर्गत ही रहते है और इसकी बढत भी राग के व्यक्तित्व के अनुसार की जाती है। स्वरों व वर्णों के मेल से रंजकता उत्पन्न की जाती है। किसी भी स्वरावली में यदि रंजक गुण न हो तो वह राग नहीं कहलाता। केवल स्वरों के उलट

पुलट कर देने से रागों का निर्माण नहीं होता। राग की रंजकता का अर्थ यह है कि वह ध्वनि समूह सहृदय रसिकों के अपूर्व आनंद की पुष्टी करने वाला हो।

राग विशिष्ट ध्वनियों की एक रचना है। जिसकी आकृति निर्धारित रहती है और उसका अपना व्यक्तित्व है। उदाहरणार्थ राग कल्याण की अपनी आकृति है तो राग केदार का एक अपना रूप। बंदिश सुनकर ही राग का रूप सामने प्रकट हो जाता है। यह रूप या आकृति परंपरा से निर्धारित होता है तथा संगितज्ञों की पीढी दर पीढी इसे सुरक्षित रखती है। राग के अंतर्गत विभिन्न स्वरों का क्रम इसकी बढते इसका -स्वर संबंध, इसका अल्पत्व-बहुत्व, इसका अंगभूत स्वर समूह सभी राग रूप को बनाने में सहायक होते है। अतः राग एक ऐसी स्वरावली है जिसकी आकृति अर्थात स्वर-वर्ण, आरोह-अवरोह, वादि-संवादी, अल्पत्व-बहुत्व, न्यास-उपन्यास इत्यादी निर्धारित है तथा यह आकृति सौंदर्यमयी भाव को प्रकट कर सहृदयी को रसानुभुति कराती है।

राग और ऋतु का संबंध शास्त्रीय संगीत में प्राचीन काल से ही दृष्टिगत होता है। जीस तरह हमारा मनोभाव दिन-रात के विभिन्न पलों में बदलता रहता है उसी प्रकार हर ऋतु में भी मानव का मनोभाव में बदलाव होता रहता है। जिस तरह प्रकृति अपनी छटा हर ऋतुमें अलग अलग बिखेरती है उसी प्रकार मानव प्रकृति भी हर ऋतु एवं हर समय बदलती रहती है। राग चुंकी मानवीय भावना है इसलीये विभिन्न रूप में हर ऋतु हर समय में मानव को आनंद प्रदान करता है। बसंत ऋतु में चारों ओर हरियाली ही हरियाली द्रष्टिगोचर होती है बसंत में जो फुल प्रफुल्लित होते हैं वह ग्रिष्म के तपन एवं जलन से मुरझ जाते हैं। जड एवं चेतन में घबराहट उत्पन्न हो जाती है। मेघ जड और चेतन की घबराहट और मुरझाये हुए फूल और पत्तों को नवजीवन अर्पित करता है और धरती की प्यास को शांत करता है। पुनः आँधी के झोंकों से वृक्ष पत्तों से रहित हो जाते हैं, फूल मुरझाये गीर पडते हैं और हेमंत ऋतु के पश्चात ठंडी एवं शीत पवन सबको आनंद प्रदान करती है।

शिशीर ऋतु में जड और चेतन पर बसंत में निखार आता है। मन में उमंगे उत्पन्न होती और तरंगे उठती है।

उपर्युक्त विवेचन में स्पष्ट है कि रागों का प्रकृति से संबंध है। कहने का तात्पर्य यह है कि राग मानवीय भावना है जो प्रकृति प्रकृतिनुसार मनोभावों में बदलाव लाता रहता है। राग भारतीय संगीत का आधार है। इसी पर संपूर्ण भारतीय संगीत का सौंदर्यबोध आधारित है। रागों को विभिन्न गायन व वादन शैलियाँ सफल करती है। गायन शैलीयों का मुख्य आधार शब्दात्मक बंदिश है। वही वाद्य यंत्रों पर स्वरात्मक बंदिश अभियंत्रित होती है। अतः इस शोध प्रबंध में रागों और बंदिशों पर ऋतु के प्रभाव को उजागर किया गया है। साथ ही साथ बंदीशों में निहित प्रकृति चित्रणों को भी उजागर किया गया है।

शोध का श्रोत : डाटा कलेक्शन

प्रस्तुत शोधकार्य में मुख्यतः विश्लेषणात्मक पध्धति से अद्ययन किया गया है। सर्वप्रथम रागों एवं बंदिशों का संकलन कर उसमें निहित सांगीतिक तथ्यों एवं भावों का निरुपण कर शोधकार्य को पूर्ण किया गया है। प्रचलित एवं अप्रचलित रागों पर आधारित आलेखों के साथ साथ संगीतज्ञों के साक्षात्कार का उपयोग मुख्य श्रोत के रूप में किया गया है।

उपसंहार

भारतीय संगीत का मूल तत्व राग है। जिसकी परिधि में हमारा संगीत विरास की और अग्रसर है। यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का बीज तत्व है जिसके प्रस्फुरन से यहां का संगीत पल्लवित और पुष्पित हुआ है। यह एक एसा निश्चित स्वर समूह है जो स्वर सप्तक में विचरता हुआ रंजकता उत्पन्न करता है और चित्त को प्रसन्नता प्रदान करता है. कला के क्षेत्र में मूल रस का रूप धारण कर गीत और उसके अवयवों द्वारा रस का संचार करता है। इस तरह हम देखते है कि राग संगीत की आत्मा है. संगीत का मूलाधार है। राग के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के मतो का निष्कर्ष निकालने पर हम पाते है कि स्वरों और वर्णों से युक्त रचनाएँ जिनके प्रदर्शन से ही जनचित्त रंजित और आनन्दित हो एसा स्वर सौंदर्य हीं राग नाम से प्रसिद्ध है।

प्रत्येक राग निश्चित समय पर गाने पर ही उसका सौदर्य निखरता है। प्राचीन काल से वर्तमान तक भारतीय संगीत में रागों का गायन अपने निर्धारित समय पर हीं होता आया है। रागों का गायन अपने निर्धारित समय पर ही होता है यह बात हमारे संस्कारों में समायी हुइ है। प्राचीन रागों में तथा वर्तमान रागों में समय सिद्धान्त पर संगीत विद्वानों में मतभेद भी है। राग समय सिद्धांत को आधुनिक काल में भातखंडे जी ने व्यवस्थित रूप देकर उसके महत्व से श्रोताओं तथा गायक वादकों को परिचित कराया है।

मानव की प्रकृति हर ऋतु और हर समय बदलती रहती है। चुंकि राग मानवीय भावना है इसलिये विभिन्न रूप में हर ऋतु और हर समय में मानव को आनन्द प्रदान करती है। प्रचलन में वसन्त ऋतु में हिंडोल राग तथा इसकी रागिनियाँ एवं पुत्रों को गाया जाता है। ग्रिष्म ऋतु का राग दीपक है। पावस का राग मेघ है और शरद का श्री राग है। हेमन्त का मालकौंस तथा शिशिर का भेरव राग है। संगीत के मुर्धन्य विद्वान पंडित दामोदर श्री राग तथा इसकी रागिनियों को शिशिर ऋतु में गाने की बात कहते है, वहीं बसन्त और इसका परिवार वसंत ऋतु में। इसी प्रकार भेरव तथा इसका परिवार ग्रीष्म ऋतु में। मेघ राग तथा उसकी रागिनियाँ वर्षा ऋतु में। इस प्रकार राग तथा इसके परिवार का संबंध विभिन्न ऋतुओं से जोडा गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की महत्वपूर्ण विद्या ध्रुवपद, धमार. ख्याल और ठुमरी है, इन सबमें राग अपने आप में एक पूर्ण इकाइ है जिसे प्रस्तुत करने का सबल माध्यम बंदिश है। शास्त्रीय गायन की परम्परा में विभिन्न गायन शैलियों की असंख्य बंदिशों की रचना हुइ है जो मौलिक रूप से पीढी-दर-पीढी आधुनिक काल तक चलती आयी है।

इस तरह बंदिश राग की आभिव्यक्ति है और उसके संपूर्ण रूप को प्रकट करने का सशल माध्यम भी है। देखने को मिला है कइ अप्रचलित राग केवल अच्छी बंदिश के द्वारा हीं प्रसिद्ध हो गए। भारतीय संगीत के गायन, वादन तथा नृत्य सभी में बंदिश एक प्रमुख तत्व है। प्राचीन काल से हीं बडे-बडे बंदिशकार पैदा हुए जिनकी बंदिशें आज भी खुब लोकप्रिय है। पंडीत भातखंडे और विनायकराव पटवर्धन की रचनाओं में मुख्यतः ऋतु संबंधी वर्णन प्राप्त होते है। ऋतु संबंधित रागों में बंदिश की रचना मुख्यतः गाइ जाती है जिसमें विभिन्न ऋतुओं एवं उसके सौंदर्य का वर्णन मिलता है। साथ ही प्रचार में कुछ एसे भी राग गाये जाते है जिसमें भिन्न-भिन्न ऋतुओं का वर्णन मिलता है। इन सभी रागों में प्रधान ऋंगारिक प्रकृति की ही सर्वत्र दिखती है प्रायः एक सा वर्णन लगभग सभी में देखने को मिलता है।

शोधकार्य के अध्याय

यह शोध कार्य निम्न अध्यायों में विभक्त कर पूर्ण कीया गया है

प्रथम अध्याय - रागों का अर्थ एवं परिभाषा, रागों का वर्गीकरण। रागों का समय सिध्धांत एवं राग एवं ऋतु इत्यादी।

द्रितीय अध्याय - ऋतु से सम्बन्धित रागों का शास्त्रीय अध्ययन।

तृतीय अध्याय - बंदिश का अर्थ एवं विभिन्न गायन शैलीयों में बंदिशों का संरचनात्मक अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय - विभिन्न गायन शैलियों में ऋतु वर्णित बंदिशों का अवलोकन।

शोध कार्य की सीमा

यह शोध कार्य कि सीमा रागों एवं बंदिशों से ऋतु के संबंध तक ही है।

शोध की समस्या

राग भारतीय संगीत की नींव है जिसपर भारतीय संगीत अवस्थित है। चुंकी राग मानवीय भावों के स्वर और शब्द के माध्यम से मानव के अंतःकरण में अंतरवैशिष्ट भावों को प्रकट करता है इन भावों पर ऋतु का क्या प्रभाव है इसी का स्पष्टिकरण करना प्रस्तुत शोध प्रबंध की समस्या थी। जीसे बखुबी निहित किया गया है और शोध प्रबंध को पूर्ण किया गया है।

शोध के लाभ

इस शोध प्रबंध से संगीत जगत को निम्न लाभ होगा

- राग और ऋतु के संबंध का स्पष्टिकरण हुआ।
- राग कि स्वरावलि में निहित रंजकत्व का स्पष्टिकरण हुआ।
- बंदिश के अर्थ का स्पष्टिकरण हुआ।
- बंदिश में निहित प्रकृति चित्रण का स्पष्टिकरण हुआ।
- राग को व्यक्त करने में बंदिश की भूमिका का भी उल्लेख किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि - प्रथम अध्याय

1. वर्मा रामचन्द्र/ मानक हिंदी कोश/चौथा खंड/पृ. -491
2. कुमार डो.अरविन्द, अभिषेक संगीत पल्लव, सारस्वत प्रकाशन, पृ.21
3. कश्यप संगीत रत्नाकर, कल्लिनाथ कृत टीका राग विवेकाध्यान पृ.7 तथा मतंग बृहद्देशी पृ.81
4. मतंग बृदहद्देशी पृ.81, श्लोक 280 तथा भरत कोष पृ. 921
5. वही पृ. 81, श्लोक 281 तथा वही पृ. 921
6. शुभंकर भरत - कोश पृ. 922
7. पाश्र्वदेव, संगीत समयसार प्रथम अध्याय पृ.19
8. शर्मा, प्रेमलता (सं) संगीतराग पृ.24
9. श्रीकंठ, रस कौमुदी पृ.13
10. सोमनाथ राग विबोध, चतुर्थ विवेक, पृ.101
11. व्यंकटमुखी, चतुर्दन्डि प्रकाशिका, राग प्रकरण पृ.56
12. पं. अहोबल, संगीत पारिजात पृ.97
13. भातखंडे, पं विष्णुनारायण भातखंडे संगीत शास्त्र भाग एक, पृ.21
14. देवधर, राग बोध भाग 1, पृ. 16
15. परंजपे डो. शरदचन्द्र श्रीधर, संगीत बपोध पृ.41-45
16. मदन पन्नालाल संगीत शास्त्र विज्ञान पृ. 58
17. दास, श्याम सुन्दर (सं), हिन्दी शब्द सागर भाग 8, पृ. 41-15
18. वर्मा रामचन्द्र, मानक हिंदी कोश, चौथा खंड, पृ. 491
19. बृहस्पति, आचार्य भरत का संगीत सिद्धान्त, पृ.74
20. वही पृ. 75
21. वही पृ 74
22. शरंगदेव, संगीत रत्नाकर भाग-2, पृ. 3
23. संगीतमकरंद पृ.23 श्लोक 52-53
24. शर्मा, भगवत शरण, भारतीय इतिहास में संगीत पृ.153
25. पाठक, पं जगदीश नारायण, संगीतशास्त्र प्रवीण पृ. 78
26. वही पृ.90
27. परांजपे डो. शरदचन्द्र श्रीधर, संगीत बोध, पृ.64

28. मदन डो. पन्नालाल, संगीत शास्त्र विज्ञान पृ. 72
29. वही पृ.73
30. साद संतोष, राग वर्गीकरण का इतिहास, संगीत जुलाइ 1987 पृ. 10
31. संगीत पारिजात पृ. 145
32. नाडकर्णी मोहन, भीमसेन जोशी, व्यक्ति और संगीत पृ. 54
33. क्रमिक पुस्तक मालिका भाग-5, पृ. 31
34. संगीत दर्पण, पृ. 76, श्लोक-26
35. बसंत, संगीत विशारद पृ.135
36. क्रमिक पुस्तक मालिका भाग-3 पृ.15
37. बन्दोपध्याय श्रीपद, संगीत भास्य पृ. 9
38. संगीत रत्नाकर द्वितय रा.वि.आ. श्लोक 29, पृ. 37
39. वही द्वितीय राग वि.आ. श्लोक-39, पृ.37
40. वही श्लोक 44, पृ. 41
41. वही श्लोक 81, पृ. 71
42. वही श्लोक 95, पृ. 81
43. वही श्लोक 110, पृ.95
44. संगीत दर्पण, श्लोक 27, पृ.77
45. वही श्लोक 30
46. संगीत पारिजात श्लोक 360, पृ.108
47. वही श्लोक 361, पृ. 109
48. शाह जयसुरतलाल त्रि. मल्हार के प्रकार पृ. 23
49. चौधरी विमलकान्त राय व्यकरण पृ. 7

संदर्भ ग्रंथ सूचि – द्वितिय अध्याय

1. गुणे पंडित नारायण लक्ष्मण, संगीत प्रभाकर दर्शिका, पाठक पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, पृष्ठ. 111-112
2. वही पृष्ठ 41
3. गुणे पंडित नारायण लक्ष्मण, संगीत प्रवीण दर्शिका भाग 2, पाठक पब्लिकेशन्स, पृ.56-57
4. वही पृ.62
5. गुणे स्व.पंडित नारायण लक्ष्मण, संगीत प्रवीण दर्शिका भाग-3, पाठक पब्लिकेशन्स, पृ.85-86
6. बेनर्जी डो,गीता, मल्हार दर्शन, संगीतश्री प्रकाशन, कानपुर, पृ.170-171
7. वही पृ.188
8. वही पृ.192
9. वही पृ.196
10. पाठक पंडित जगदीश नारायण, संगीत शास्त्र प्रवीण, पाठक पब्लिकेशन्स, पृ.282
11. बेनर्जी डो,गीता, मल्हार दर्शन, संगीतश्री प्रकाशन, कानपुर, पृ.279
12. पंडित भातखंडे, क्रमिक पुस्तक मालिका, पृ.322
13. तानसेनी तथा गौडो दयारुणी झांझ नामिका। भा,सं,शा, भाग 1, पृ.254
14. बेनर्जी डो,गीता नारायण लक्ष्मण, संगीत प्रवीण दर्शिका भाग 3, पाठक पब्लिकेशन्स, पृ.215
15. वही पृ.220
16. श्रीवास्तव प्रो.हरिशचन्द्र मधुरस्वरलिपि संग्रह भाग 2, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, नवम संस्करण 2011, पृ.156
17. वही भाग 3, पृ.50-51
18. वसंत, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ.301
19. गुणे स्व.पंडित नारायण, संगीत प्रवीण दर्शिका, भाग 4, पृ.56
20. संगीत, अप्रचलित राग ताल, अंक - जनवरी-फरवरी 1983, पृ.90
21. वही पृ.108
22. पंडित दामोदर, संगीत दर्पण, अनुवादक - भट्ट डो,विश्वम्भरनाथ, संगीत कार्यालय, हाथरस, संस्करण-जुन 2015, पृ.77
23. वही पृ.87
24. श्रीवास्तव प्रो.हरिशचन्द्र, मधुर स्वरलिपि संग्रह, भाग 3, पृ.241

25. संगीत दर्पण, पृ.87
26. वही पृ.70
27. Khiwiki-org.in

संदर्भ ग्रंथ सूचि – तृतिय अध्याय

1. बाहरी, डॉ हरदेव राजपाल हिन्दी शब्द कोश, पृ.570
2. भारतीय संगीत में निबद्ध तथा अनिबद्ध गान डॉ.विजय चादरोकर पृ.सं. 2
3. पंत डॉ. शिप्रा. राग शास्त्र में पारंपरिक बंदिश की भूमिका पृ.सं. 2
4. संगीत पत्रिका जून अंक 2001, श्री शांताराम कशलाकर पृ.सं. 25
5. प्रसाद राजेश, बंदिश, लक्ष्मी प्रकाशक, पृ. 52
6. पंत डॉ- शिप्रा राग शास्त्र में पारंपरिक बंदिश की भूमिका, पृ. 23
7. अत्रे- डॉ- प्रभा स्वरंजनी- पृ- सं. 7,11,12
8. भातखंडे. स्मृति ग्रंथ, श्री पी.एन. चिंचोरे पृ. सं.11
9. पंत] डॉ- शिप्रा राग शास्त्र में पारंपरिक बंदिश की भूमिका, पृ. 24
10. पंडित प्रो. देवव्रत चौधरी के साक्षात्कार से प्राप्त
11. वही
12. Muktkar Prof. Sumati, Aspect of Indian Music page 198
13. प्रो. देवव्रत चौधरी के साक्षात्कार से प्राप्त
14. मेहता श्री रमन लाल, आगरा घराना: परम्परा गायकी और चीजें, पृ. 43
15. भटनागर मधुरलता, भारतीय संगीत का सौंदर्य विधान, पृ. 158
16. संगीत रत्नाकर प्रथम अध्याय, गीति प्रकरण श्लोक सं. 14
17. पंत डॉ.शिप्रा, रागशास्त्र में पारंपरिक बंदिशों की भूमिका अंकित पब्लिकेशन दिल्ली पृ.54-56
18. चिंचारें श्री पी.एन. भातखंडे स्मृति ग्रंथ पृ. 11
19. चादरोकर डॉ. विजय, भारतीय संगीत में निबद्ध तथा अनिबद्ध गान पृ. 2
20. जैन डॉ. रेनु स्वर और राग पृ. 281
21. पंडित भावभट्ट, 'अनुप संगीत रत्नाकर, स्वराध्याय श्लोक 165-167, पृ. 95
22. भारतखंडे पं. विष्णु नारायण क्र. पु. मा. तीसरी भाग पृ. 6000-602

23. वही पृ. 53-54
24. सुविख्यात गायक पं. कामोद पाठक से प्राप्त
25. पंत डॉ. शिप्रा राग शास्त्र में पारंपरिक बंदिशों की भूमिका पृ. 69
26. गर्ग लक्ष्मीनारायण निबंध संगीत पृ. 65
27. भारतखंडे संगीत विष्णु नारायण क्र. पु.मा. अंक 2 पृ. 137-138
28. लक्ष्य संगीत ध्रुपद गायकी की समस्याएँ जू. 1958, पृ. 18
29. शोध आलेख, ख्याल शैली शोध मीमांसा पृ. 28
30. भातखंडे पं. विष्णु नारायण संगीत शास्त्र प्रथम भाग, पृ. 55
31. जोशी उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. 356
32. वही, पृ. 359
33. चौधरी सुभद्रा, संगीत संचयन, पृ. 178-179
34. संगीत जनवरी 1957, पृ. 143
35. मिश्र शंकरलाल, नवीन ख्याल रचनावली, सं. 1998
36. शुक्ल टी.आर. नवनिर्मित एवं अप्रचलित राग मंजरी एवं शास्त्र प्रथम संस्करण 1986
37. पटवर्द्धन डॉ. सुधा, संगीत राग विज्ञान चतुर्थ भाग पृ. 80
38. संगीत प्राध्यापक डॉ. अरविन्द कुमार से प्राप्त
39. वृहस्पति आचार्य, संगीत चिंतामणि पृ. 103
40. पंत पं. चन्द्रशेखर लिटररि आस्पेक्ट ऑफ ठुमरी कला भारती सम्मेलन पत्रिका पृ. 40
41. मिश्रा सुशीला लखनऊ की संगीत परम्परा, पृ. 12
42. नाडकर्णी, मोहन ठुमरी एक मूल्य मापन संगीत कला बिहार मई 1991, पृ. 143
43. सिंह ठाकुर जयदेव, ठुमरी का विकास, संगीत कला बिहार, मई 1991, पृ. 99
44. मोहनकर, डॉ. सुशीला, ठुमरी गायन शैली में लोक संगीत का तत्व संगीत कला बिहार, मई 1991, पृ. 96
45. उस्ताद बज्जन खां से भेंट वार्ता के आधार पर
46. शारंगदेव, संगीत रत्नाकर चतुर्थ प्रबंधाध्याय श्लोक सं. 15 और 18
47. व्यास भरत, ध्रुवपद समीक्षा, पृ. 96
48. राठौड़ डॉ. भारती, ठुमरी, पृ. 149
49. भातखंडे क्रमिक पुस्तक मालिक भाग-2, पृ. 404
50. डॉ. अरविन्द कुमार संगीत विभागाध्यक्ष पटना विश्वविद्यालय, पटना द्वारा प्राप्त

51. वही

52. उस्ताद बड़े गुलाम अली खां द्वारा गाया हुआ।

53. उस्ताद अब्दुल करीब खां द्वारा गाया हुआ।

54. सिन्धुबाला उत्तर भारतीय संगीत में स्वतंत्रतापूर्व एवं स्वातंत्रयोतर ठुमरी गायकी और शैलियाँ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ. 155

55. देवागंन पंडित, तुलसीराम, संगीत संजीवनी भाग 1, पृ. 48-49

अध्याय 4 संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. भातखंडे, पं. विष्णु दिगंबर, क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग-6, पृ. 320
2. वही, पृ. 290-291
3. भारखंडे, पं. विष्णु दिगंबर, क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग-5, पृ. 165-166
4. वही, पृ. 73-74
5. भातखंडे, पं. विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका, तीसरी पुस्तक, पृ. 114-15
6. भारतखंडे, पं. विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग-4, पृ. 243-244
7. कुमार (डॉ.) अरबिन्द प्राध्यापक, संगीत विभाग, मगध महिला महाविद्यालय द्वारा प्राप्त किया।
8. भातखंडे, पं. विष्णु नारायण क्रमिक मालिका, भाग-4, पृ. 559-560
9. संगीत जनवरी 1987, पृ. 143
10. देशपांडे, अश्विनी भिंडे, राग रचनांजलि, पृ. 101
11. भातखंडे, पं. विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका, पृ. 612-613
12. बनर्जी, डॉ. गीता राग शास्त्र, भाग-2, पृ. 54-55
13. चौधरी (डॉ.) नीरा प्राध्यापिका, मगध महिला महाविद्यालय द्वारा प्राप्त किया
14. वही
15. वही
16. कारवल श्रीमती लीला, ठुमरी परिचय, पृ. 100-102
17. अत्रे प्रभा स्वरांगिनी शब्द और स्वर पृ. 246
18. वही, पृ. 238
19. कारवल, श्रीमती लीला, ठुमरी परिचय, पृ. 110-111
20. उस्ताद वज्जन खां से प्राप्त